फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 103
जनवरी 1997

नारद मुनि का सन्देश : "मजदूरों को नववर्ष की शुभ कामनायें ! साहबों से नमस्ते बन्द !"

वीणा की झँकार

नये पुराने संस्कारों का असर अभी हम पर है। नये साल के पहले अंक में नयेपन के लिये हम चिन्तित हो जाते हैं। तय रहता है कि अखबार का जनवरी अंक अलग नजर आये। इस बार 25 दिसम्बर को छापने के लिये सामग्री तैयार करते समय कई विचार आये। पहले हमने "पुरानी राहें पिटना लिये हैं; नई राहों की सृष्टि -निर्माण - सुदृढता जरूरी" शीर्षक से लिखने की सोची। परन्तु पुरानी राहों की चर्चा हमें फालतू लगी क्योंकि सब जानते हैं कि नेता चोर होते हैं और चोर ही हो सकते हैं। जिसे सब जानते हैं उसे दोहराने में कोई तुक नहीं। इसलिये हमने नई राहों से चर्चा शुरू करने की ठानी। ओस के कणों के समान शनैः-शनैः,चुपके-चुपके आकार ग्रहण कर चुकी, ठोस शक्ल अख्तियार कर चुकी नई राहों पर चर्चा में प्रवचन की बू से कैसे बचें का प्रश्न तब हमारे लिये टेढी खीर बन गया। जटिलता से बचने के लिये हमने दूसरा शीर्षक सोचा। नई राहें हकीकत का हिस्सा बन चुकी हैं परन्तु हमारे मन-मस्तिष्क में वे अभी पैठ नहीं पाई हैं। विचारों को व्यवहार के मुताबिक ढालने के लियें "मन की गाँठें" शीर्षक से गाँठें खोलने की सोची पर इसमें मनोविज्ञान का ज्यादा पुट नजर आया इसलियें इसे भी छोड़ दिया। तब सीधे-सपाट बयान के लिये "कर ही क्या सकते हैं!" की काफी फैली हुई निराशा की धुन्ध को छाँटने के लिये पेन्सिल से काट-छाँट शुरू की पर काट ही काट होती गई। इस प्रकार 28 दिसम्बर आ गया और नये साल के लिये नया कुछ लिखने में असफलता ने घबराहट पैदा की। मुँह में अदरक रख कर हम ध्यान को केन्द्रित किये बैठे थे कि वीणा की झँकार से हम चौंक गये ।

नारद मुनि मजदूर लाइब्रेरी में प्रवेश कर चुके थे और हमारा ध्यान आकर्षित करने के लिये उन्होंने वीणा के तार छेड़े थे। "किस सोच में डूबे हो वत्स? " के नारद जी के प्रश्न पर हमने मुनिश्री से आसन ग्रहण करने का निवेदन किया और उन्हें अपनी समस्या बताई। इस पर उन्होंने मुस्कुराते हुये कहा, "इसमें इतने सोच-विचार की क्या जरूरत है। काफी दूर से आया हूँ, इसलिये पहले चाय पिलाओ फिर नये-नये समाचारों से तुम्हारी समस्या चुटकियों में हल कर दूँगा।"

चाय की चुस्कियाँ लेते हुये रमते जोगी ने कहा, "द्वीप -महाद्वीप तो क्या, मैं नदी-झील-समुद्रों तक के चप्पे-चप्पे पर जाता हूँ। इधर इस लोक में मैंने ऐसी-ऐसी चीजें देखी हैं कि तुम मेरी बातें ही लिख दिया करोगे तो तुम्हारा हर अंक नववर्ष अंक बन जायेगा। इहलोक में इतना कुछ नया हो रहा है कि मुझ जैसा चिर यात्री भी उससे कदम नही मिला पा रहा। मैं आस्ट्रेलिया में था तब घन्टों फोन पर मैंने दुनियाँ के कोने-कोने में लोगों से वार्तालाप किया। तुम से बात करने का मेरा बहुत मन था पर तुम लोग इतने पीछे चल रहे हो, इतने पुरातन हो कि मजदूर लाइब्रेरी में फोन तक नहीं है। खैर नई बात नोट करो, बहुत मजेदार है। हुआ यह था कि आस्ट्रेलिया में टेलिफोन वरकरों ने मैनेजमेन्ट पर अपनी शर्तें थोपने के लिये फोन करना फ्री कर दिया था। वहाँ **संचार मजदूरों ने बिल बनाने वाले कम्प्युटरों को बन्द कर दिया और टेलीफोन लाइनें चालू रखी। लाखों लोगों ने दूर-दराज रह रहे अपने प्रियजनों से ही घंटों बातें नहीं की बल्कि अनजान लोगों को नये-नये मित्र भी बनाया। घड़ी की टिक-टिक गायब थी, बिल में रीडिंग जीरो थी। बहुत मजा आया !** मजदूर और आम लोग मस्ती में और मैनेजमेन्ट पसीने-पसीने !"

कुछ याद आने पर धाराप्रवाह बोल रहे नारद जी मौन हो गये और उनकी आँखें खुशी से चमकने लगी। हम उनके मनोहारी मुख को ताकने लगे। अचानक मुनिश्री ने बिजली से चल रहे रेडियो की तरफ देखा और बोले "पावर है और तुम्हारे पास हीटर भी है इसलिये एक कप और कड़क चाय बनाओ।" हम चाय बनाने लगे तब चल रहे मीटर की तरफ देख रमते जोगी ने कहा, "तुम वास्तव में बहुत पुराने खयाल के हो! आजकल मैं तो जहाँ भी जाता हूँ वहाँ लोगों के हीटर जलते समय मीटर बन्द देखता हूँ। पैदा सब कुछ मजदूर करते हैं इसलिये माहौल को देखते हुये थोड़ी चौकसी अवश्य बरतनी चाहिये पर अन्यथा मजदूरों को सब चीजें बेझिझक फ्री में इस्तेमाल करने की कोशिशें करनी चाहियें।"

मुनिश्री की प्यारी-प्यारी बातों से हमारे मन पर चिपकी संस्कारों की कालिख धुलने लगी। कप की जगह गिलास भर कर हमने नारद जी को चाय दी। हावी नैतिकता की बेड़ियों से मुक्त हो कर चहकने लगे मन के साथ हम उनकी बातें सुनने लगे।

रमते जोगी शुरू हो गये : "तुम्हारे साथ यात्रा पर निकलता हूँ तब लकीर के फकीर बन कर तुम टिकट की लाइन में लग जाते हो और सफर की शुरुआत ही बिगाड़ देते हो। यहाँ 16 घंटे की औसत ड्युटी वाले शटल ट्रेनों के डेली पैसेंजर भी तुमसे फारवर्ड हैं। जवानी में ही हड्डियाँ निकल आती हैं पर यात्रा तो फ्री कर ही लेते हैं। सरकारों को पैसे देने की कोई तुक है क्या? हकीकत देखो! मारकाट के लिये तोपों-मिसाइलों, साहबों-मंत्रियों की मौज-मस्ती और लोगों को हड़काने के लिये वर्दीधारियों पर ही तो ज्यादातर सरकारी पैसा खर्च होता है। और आमदनी बढ़ाने के लिये मजदूरों पर क्या-क्या नहीं थोपा जाता! कई जगह तो मजदूरों पर वर्क लोड बढ़ाने के लिये मैनेजमेन्टों ने कन्डकटर तक हटा दिये हैं और ड्राइवरों को ही

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच मछली मार्केट की बगल में है।)

गजलें

कब तक वजूद अपना मिटाया करेंगे आप
जालिम के आगे सर को झुकाया करेंगे आप।

पेड़ों में बबूलों के आमों की आरजू
रखते हैं गर तो कैसे पाया करेंगे आप।

अपनी बुराइयों को दफना के हर दफा
औरों पे कैसे उँगली उठाया करेंगे आप।

बुझना ही जिस चराग की किस्मत में हो लिखा
ऐसा चराग कब तक जलाया करेंगे आप।

मालूम जिसे अपनी ही मंजिल नहीं 'राजन'
कब तक उसी को रहबर बनाया करेंगे आप।

– **एच.आर. गौतम 'राजन'**, सुलतानपुर

(वजूद – अस्तित्व, रहबर –रास्ता दिखाने वाला)

आज रात इक ख्वाब देखा और रो दिए
ख्वाब में आपको जनाब देखा और रो दिए।

कर रहा था बुलन्द कोई 'नारे–बगावत' तन्हा
इस दौर का इन्कलाब देखा और रो दिये।

छुपा के रखा था जिसमें तेरी यादों के गुलाब
मेज पर रखी वह किताब देखा और रो दिये।

पिलाने वाला था वो आबे ज़मज़म और गंगा
उसके हाथों में शराब देखा और रो दिये।

कौन आया था मेरे आँगन में
मसला हुआ गुलाब देखा और रो दिये।

सर पे बोझ लिये बच्चा उदास था "निसार"
उसकी आँखों में आब देखा और रो दिये।

– **निसार असगर "निसार"**, सुलतानपुर

(आब–पानी, आबे ज़मज़म – काबा का जल)

फरीदाबाद के मजदूरो ये ऐलान सुनो
दिल की आवाज को दफन मत करो
इस दिल का फरमान सुनो
तुम मजदूर हो
मजदूर ही तुम्हारी व्यथा समझता है
क्या हैं गरीबी की कथायें समझता है
मालिक तो हँस –हँस के
उजरत भी नहीं दे सकता
तुम्हारे दुःख–दर्द को वो
नाटक समझता है।

– **आलोक** फरीदाबादी

कवितायें

धोती घुटनों से ऊँची
गाल पिचके, ऊँचे डौल
टीन के बक्से, गठरी
ढोते–ढोते थक गई ठठरी।

इंच, फीट, गज और मीटर
समृद्धि के नित नये पैमाने
बाँधों की रेलम–पेल में
ऊँचाई पर नजर है ठहरी।

झुक–झुक करती रेल है चलती
कंक्रीट के जंगल में
काले टेढ़े–मेढ़े रोड हैं ...ते।

रोजगार के नामपट्ट पर
उरोज से चिपके शिशु
मानो पढ़ रहे हों
माँ के साथ हमारी भी है भर्ती।

फावड़े और बेलचे, गड्ढे खोद रही
चुहचुहाते पसीने वाले चेहरे
नितम्बों और उरोजों पर
राहगीरों की आँख है भटकी।

हूँह, थके हुये पसीने पोंछते
पलकें उठी आसमान में
हमारी तकदीर क्या
बादलों पर अटकी।

-**अशोक**, फरीदाबाद

आओ मजदूरो आओ
एका मजबूत बनाओ
अपनी मेहनत अपना हाथ
कंधे मिला चलेंगे साथ
अपनी ताकत दिखलाओ
जिस्म हमारा पूँजी अपनी
हाथ विलक्षण कुँजी अपनी
मेहनत गीत सुनाओ
रोटी कपड़ा और मकान
हमें चाहिये इज्जत–मान
हिम्मत से लड़ जाओ
यह संसार हमारा है
मेहनतकश का नारा है
पग पग बढते जाओ।

–**सुरेश कांटक**, बक्सर (बिहार)

खत डालने के लिये पता :
मजदूर लाइब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
फरीदाबाद-121001

गधे की आत्मा

पात्र परिचय :
धोबी – मालिक या मैनेजमेन्ट
कुत्ता – लीडर
गधा – मजदूर यानि हम और आप

सबसे पहले मैं, 'निसार' सुलतानपुरी, मजदूर बहनों और भाईयों से माफी चाहूँगा क्योंकि उन्हें मैंने 'गधे' के खिताब से नवाजा है। मगर यह भी तो एक जीव है हमारी तरह – ईमानदार, मेहनती और मजबूर। हैरान मत हो दोस्तो। मैं हूँ "गधे की आत्मा"। यह मेरी आत्म कथा है। मैं, मेरे साथी और हमारे परिवार एक धोबी के यहाँ पुश्तैनी नौकर थे। यह नौकरी ही थी जो हमारे पुरखे विरासत में छोड़ गए थे। धोबी बहुत ही निर्दयी था। कमसिनी के आलम में भी वह मेरे बच्चों पर बोझ लाद दिया करता। मेरे बच्चे सिसकते रहते और मैं अपनी बेबसी पर रोता रहता। अगर कोई बीमार हो जाता तो उसका भी बोझ हमारी पीठ पर होता। मैं इस दर्दनाक जिन्दगी से ऊब चुका था। पर जब भी जुल्म के खिलाफ बगावत करने की सोचता तो मेरी बुजदिली रास्ता रोक लेती।

धोबी के पास एक कुत्ता था जो उसकी चमचागिरी करता था। वह धोबी के आस-पास पूँछ हिलाता फिरता। उसकी जिन्दगी सिर्फ अपने लिए थी और हमारी खबरें देता रहता था।

चाहे सर्दी हो, गर्मी की तिलमिलाती धूप या फिर बरसात, हम सुबह ही कपड़े लादे कुत्ते के पीछे चल देते और फिर शाम को घाट से वापस आते। यही हमारी दिनचर्या थी। बदले में मिलती थी सूखी घास और बोनस में डंडे। यह हमारे खून-पसीने और ईमानदारी का फल था। मैं इसे किस्मत का खेल समझ कर सह लेता। कुत्ता हराम में दूध पीता और हमारी बेबसी पर हँसता रहता। हम भी उसके साथ जोर-जोर से हँसने लगते। मगर क्यों? बिना जाने, बिना समझे क्यों हँसते हैं?

वक्त के ऊँट ने करवट बदली। धोबी की किस्मत और जागी। वह इलेक्शन लड़ा और मंत्री हो गया। कहावत है कि "धोबी का कुत्ता घर का न घाट का" मगर ये दोगले, शंकर नस्ल के कुत्ते हैं इसलिए इन पर ये कहावत लागू नहीं हुई। अब ये कुत्ते कार वाले हो गए। धोबी मंत्री उपाधियाँ बाँट रहे थे। किसी को भारत रत्न, भूषण, जयश्री, पद्मश्री वगैरह-वगैरह। मैं भी खुश हो गया। शायद मुझे भी कुछ मिले – कम से कम "गधाश्री"

मगर मिला क्या?

आश्वासन!

और माननीय श्री धोबी महोदय चारा घोटाला कर तालाबन्दी कर गए। धोबी महोदय शहर चले गए।

तालाबन्दी देख मेरे अन्दर का गधा जागा। मेरे बच्चों की भूख-प्यास ने मेरी खुदी को कुरेदा। मेरी बुजदिली मर गई और मैं जोर-जोर से चिल्लाने लगा "इन्कलाब जिन्दाबाद!" मगर कोई नहीं आया। मैं अपना राग अलापता रहा और रहूँगा।

मैं जानता हूँ भैंस के आगे बीन बजाना बेकार है। ये अपने आप को बदलना नहीं चाहते, जहाँ हैं वहीं रहेंगे। इन्हें कोई बुजदिल कहे या गधा, इनके जज्बात को ठेस नहीं लगने वाली।

यहाँ इन्कलाब के नारे बुलन्द न कर 'निसार'
बुजदिलों की बस्ती है ये, कोई नहीं आने वाला।
आपके लिये इन्कलाब ही नये साल का बेहतरीन तोहफा है।
इन्कलाब जिन्दाबाद!

14.12.96 – **निसार असगर**, सुलतानपुर

वीणा की झँकार (पेज एक का बाकी)

टिकटों की भी देखभाल करनी पड़ती है। पर रोमांचक धोबी पछाड़ दाव देखो। अमरीका में मैंने ऐसे पर्चे चिपके देखे जिनमें यात्रियों द्वारा पैसे नहीं देने और ड्राइवरों द्वारा पैसे नहीं लेने के आह्वान थे। जगह-जगह लोग कहने लगे हैं कि कोई भी किराया जायज किराया नहीं है। मैनेजमेन्टों पर अपनी शर्तें थोपने के लिये ट्रांसपोर्ट वरकरों ने इटली के टुरिन शहर, कोरिया की राजधानी सिओल, जर्मनी में हनोवर नगर, कनाडा में मोन्ट्रियल शहर में लाखों यात्रियों को ट्रेनों व बसों में फ्री में यात्रायें करवाई हैं। काम के रक्तबीज बन जाने के दृष्टिगत ,जितना काम करो उतना ही काम बढता जाता है को देखते हुये कारखानों और दफ्तरों में खटने वाले मजदूरों तथा ट्रांसपोर्ट वरकरों में तालमेल जगह–जगह देखने में आ रहा है। कई जगह मैंने रेलवे स्टेशनों और बस अड्डों पर पोस्टर देखें हैं जिनमें यात्रियों से फ्री यात्रा करने , ट्रांसपोर्ट वरकरों से किराया न लेने व चेक नहीं करने तथा ट्रांसपोर्ट हड़ताल की स्थिति में परेशान होने की बजाय कारखानों व दफ्तरों में काम करने वालों से सवेतन छुट्टी मनाने और पैसे मैंनेजमेंन्टों से वसूल करने के आह्वान होते हैं। सरकारों और मैनेजमेन्टों को समझ नहीं आ रहा कि करें तो क्या करें। सिर-माथों के पिरामिडों पर बैठे फूल कर कुप्पे हुये साहब लोग पिचकने लगे हैं , उनकी हवा निकल रही है।

थोड़ी देर चुप हो कर नारद जी ने पूछा, "बहुत हो गया या अभी और बताऊँ ?" हमारे द्वारा बातें जारी रखने के अनुरोध पर मुनिश्री फिर शुरू हो गये : "पृथ्वी लोक में फ्री की बयार इस कदर चलने लगी है कि स्वर्ग लोक निवासियों को बताऊँगा तब वे ईर्ष्या से जल-भुन जायेगें। यहाँ लोगों को मैंने जगह–जगह यह कहते सुना हैं कि यह रुपये-पैसे कहाँ से बीच में आ गए। पैदा जब हम करते हैं तो इस्तेमाल भी हम ही करेंगे। इन विचारों को व्यवहारिक रूप ग्रहण करते देखना एक अनूठा अनुभव है। अब छोटी-छोटी दुकानों का जमाना तो खात्मे की ओर है ही, विशाल डिपार्टमेन्टल स्टोर भी लड़खड़ाने लगे हैं। कई जगह मैंने डिपार्टमेन्टल स्टोरों में बिल बनाने वाले वरकरों द्वारा बिना बिल बनाये आइटमों को आगे सरकाते देखा है। परेशान मैनेजमेंटें इस बात से और भी परेशान हैं कि गार्ड भी जान-बूझ कर अनदेखी कर रहे हैं। डिपार्टमेन्टल स्टोरों से लोग फ्री में सामान ले जाते हैं। और तो और, जिसे बैकवर्ड कहा जाता है उस मध्य प्रदेश के छोटे कस्बों में समूहों में लोगों को दुकानों से फ्री में अनाज उठाते देख कर मेरा मन खुशी से झूम उठा। फ्री के इस आलम में दुकानदार परेशान, मैनेजमेंन्टे परेशान, सरकारें परेशान, वर्ल्ड बैंक - आई एम एफ परेशान ! मण्डी-मार्केट और होड़-प्रतियोगिता के सेनापति हड़बड़ाहट में गरीबों को आधे रेट पर अनाज देने की घोषणायें कर रहे हैं। अब इन ज्ञानियों को कौन समझाये कि जब फ्री में ले सकते हैं तो आधे या चौथाई रेट में लोग क्यों लें। फ्री के बढ़ते आलम का ही यह असर है कि बड़ों का बड़प्पन पिचक रहा है तभी तो रुपये-पैसे की रक्षा करने की कसमें खाने वाले बड़े-बड़े नेता-अफसर खुद सरकारी खजानों से यूँ ही पैसे उठा कर लँगड़ाते रुपये-पैसे का दूसरा पैर भी तोड़ने में लगे हैं। आस्ट्रेलिया हो चाहे अमरीका या फिर फ्रॉस, सब जगह फ्री में सामान कैसे लें के बारे में रोचक लेख मैंने पढ़े हैं और लॉस एंजेल्स में तो लाखों लोगों को यह करते देख अमरीका सरकार को इमरजैंसी लगानी पड़ी थी। यहाँ फरीदाबाद में 800 रुपये में महीने के तीसों दिन आठ घंटे की ड्युटी करते हजारों सेक्युरिटी गार्ड इस फ्री के खेल में खुल कर शामिल हो जायेंगे तब देखना कितना मजा आएगा।"

फरीदाबाद का जिक्र करते ही जैसे कोई भूली बात मुनिश्री को याद आ गई। वे जल्दी-जल्दी बोलने लगे : "अभी के लिए इतना ही काफी है बेटा। मुझे एक बहुत अर्जेन्ट बात याद आ गई है। तुम्हारे लिए भी है इसलिए सुन लो। मजदूर लाइब्रेरी में आने से पहले फरीदाबाद में दो-तीन जगह मजदूरों द्वारा साहबों से नमस्ते बन्द करने की बातें सुनी। मेरा रोम - रोम खिल उठा। मुझे अहसास हुआ कि यह तो मजदूरों के हाथों में एक बहुत ही जबरदस्त हथियार है। मजदूरों द्वारा साहबों से नमस्ते बन्द करने पर साहबों के अहम् पर तो चोट लगती ही है परन्तु अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि साहबों की समझ में नहीं आता कि क्या करें। नमस्ते बन्द करना साहब इतना खतरनाक मानते हैं कि फौज में तो इसके लिए सजा का प्रावधान है। किसी द्वारा अकेले तौर पर ऐसा करना नुकसान लिए है पर मजदूर जब मिलजुल कर साहबों से नमस्ते बन्द करते हैं तब यह फायदे ही फायदे लिए है। साहबों से नमस्ते बन्द करना मजदूरों और मैनेजमेन्टों के बीच, मजदूरों और सरकारों के बीच साफ-साफ लकीर खींचना है। शायद इसीलिए नमस्ते बन्द करने से ऊँच -नीच का पूरा तन्त्र लड़खड़ाने लगता है। और इसकी सबसे बड़ी खूबी यह है कि मिलजुल कर सब मजदूर आसानी से यह कर सकते हैं। फैक्ट्रियों के वरकर हों या वर्कशॉपों के, ट्रांसपोर्ट वरकर हों चाहे डिपार्टमेंटल स्टोरों में काम करने वाले मजदूर, पर्मानेंट हों चाहे कैजुअल या ठेकेदारों के, सब मजदूर आसानी से मंत्रियों–अफसरों–लीडरों से दुआ-सलाम बन्द कर सकते हैं। इसीलिए तुम्हारे हाल-चाल पूछ कर मैंने नववर्ष के संदेश के तौर पर इसे पृथ्वी लोक के कोने-कोने में फैलाने का निर्णय लिया था। जल्दी है और जगह–जगह अलख जगाना है। तुम भी फूँक मारो। मेरा नववर्ष का पैगाम है : साहबों से नमस्ते बन्द !"

हम मुनिश्री की आखिरी बातों को नोट कर ही रहे थे कि नारद जी तेजी से मजदूर लाइब्रेरी से निकल गए। ■

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक–एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

लखानी शूज

लखानी ग्रुप की फरीदाबाद स्थित 16 फै[illegible]यों में 3500 में से 400 मजदूर परमानेन्ट। आमतौर पर 12 घन्टें की ड्युटी [illegible] मैनेजरों और ठेकेदारों द्वारा गाली-गलौज व मार-पीट। ठेकेदारों के 1500 [illegible]जदूरों को सरकारी न्यूनतम वेतन भी नहीं देना। मजदूरों के हाथ कटना [illegible]फड़े खराब होना और 28–30 साल की उम्र में बूढ़े हो जाना आम बात। पर[illegible]नेन्ट में दस परसैन्ट को ही ई एस आई कार्ड। 1500 कैजुअल और 1500 ठेके[illegible] के मजदूरों को ई एस आई कार्ड नहीं देना। 16 फैक्ट्रियों के लिए एक वै[illegible] जिससे एम्बुलैन्स के अलावा अन्य काम भी लेना। मार्किट रेट पर कैन्टीनों में चीजें। लीडरों को ठेकेदार बनाना। 24 व 25 सैक्टर के औद्योगिक क्षेत्रों में स्थित 16 फैक्ट्रियों के अलावा यहां लखानी ग्रुप रिहाइशी इलाकों में मशीनें लगा कर 32 ठेकेदारों के जरिये बहुत ही कम तनखा में दो हजार मजदूरों से काम करवा रहा हैं, जिनमें बड़ी तादाद में बच्चे भी हैं। फरीदाबाद के अलावा लखानी ग्रुप की नोएडा में 2, भिवाड़ी में 2, और इन्दौर में 2, फैक्ट्रियाँ हैं। जाहिर है कि छोटी-सी वर्कशॉप का चन्द वर्षों में दर्जनों वर्कशॉपों और 22 फैक्ट्रियों का ग्रुप बन जाना न तो किस्मत का खेल है और न ही किसी के आशीर्वाद का फल।

2 दिसम्बर 96 से फरीदाबाद में 9 जगह धरने पर बैठे लखानी शूज के मजदूर हकीकत का बयान कर रहे हैं।

● **परमानेन्ट मजदूर** मात्र 400 हैं। तनखा बहुत कम और अत्यधिक वर्क लोड। सब वरकर हैल्पर भी हैं और आपरेटर भी। ओवर टाइम डबल की बजाय डेढ के रेट से। दस परसैन्ट को ही ई एस आई कार्ड। छुट्टी नहीं देते, बदले में पैसे देते हैं। किसी वरकर की छुट्टियाँ होती हैं तब भी छुट्टी करने पर पैसे काट लेते हैं। असिस्टेन्ट जनरल मैनेजर और प्रोडक्शन मैनेजर स्तर के अफसर गालियाँ देते हैं और मार-पीट भी करते हैं।

● **कैजुअल वरकर** 1500 हैं। भरती करते समय कोरे कागज पर दस्तखत करवाते हैं। लगातार ग्यारह महीने काम करने पर भी निकाल देते हैं। जबरन ओवर टाइम करवाते हैं। ओवर टाइम के पैसे डबल की बजाय डेढ़ के रेट से। अफसर गाली-गलौज और मार-पीट करते हैं। किसी को ई एस आई कार्ड नहीं देते। जबरन मशीनें आपरेट करवाते हैं। हर महीने दो-तीन के हाथ कट जाते हैं। चोट लगने पर फौरन नौकरी से निकाल देते हैं।

● **ठेकेदारों के मजदूर** 3500 हैं – 2000 रिहाइशी बस्तियों में लगी मशीनों पर और 1500 सैक्टर–24 व 25 में 16 फैक्ट्रियों में। रिहाइशी बस्तियों स्थित वर्कशॉपों में बाल व महिला मजदूरों की और भी दुर्गत। 900 से 1200 रुपये महीने पर फैक्ट्रियों मे खटना पड़ता है। वर्तमान हलचल की वजह से सिर्फ लखानी रबड़ वर्क्स में 1460 रुपये वाला न्यूनतम वेतन लागू किया हैं। जबरन ओवर टाइम और पेमेन्ट डबल की बजाय सिंगल रेट से। 24 व 25 सैक्टर में 78 ठेकेदार रिहाइशी इलाकों में 32 ठेकेदर। गालियाँ देते हैं और फैक्ट्रियों में भी दस ठेकेदार तो मार-पीट भी करते हैं। कोई फन्ड, बोनस नहीं। ई एस आई कार्ड किसी को नहीं। एक्सीडेन्ट होने पर ठेकेदार दवाई के पैसे भी नहीं देते।

➔ **लीडर बनते ठेकेदार** अन्य मजदूरों की ही तरह लखानी शूज के मजदूर भी अपनी बदहाली के खिलाफ लगातार संघर्ष करते हैं। फैक्ट्रियों में मजदूर विभिन्न रूपों में मैनेजमेन्टों का विरोध करते हैं और लखानी ग्रुप की हर फैक्ट्री में भी मजदूर यह करते हैं। विरोध के इस अटूट सिलसिले में लखानी मजदूरों ने भी कई बार अपने बीच में से लीडर चुने हैं और बाहर के लीडरों के पीछे चले हैं। नेताओं को चन्दा देने में लखानी ग्रुप के मजदूर किसी से पीछे नहीं रहे हैं। और जैसा अन्य जगह करते हैं वैसा ही लीडरों ने लखानी फैक्ट्रियों में किया है। चन्दा खाना तो छोटी बात है, बड़े लीडरों ने थोक में मजदूरों को निकलवाने के लिये ठेके लिये और फैक्ट्री-स्तर के लीडर लखानी ग्रुप की फैक्ट्रियों में ही ठेकेदार बन गये। मजदूर से लीडर और फिर लीडर से ठेकेदार बने लोग मैनेजमेन्ट के धारदार चाकू बने हैं। मजदूर से लीडर बनते जो लोग लीडरी करने लायक नहीं थे उन्हें लखानी मैनेजमेन्ट भी अन्य मैनेजमेन्टों की ही तरह निकालती रही है।

➔ **पुलिस की चाँदी** उबल रहे मजदूरों पर कन्ट्रोल स्थापित करने के लिये लखानी मैनेजमेन्ट ने जुलाई 96 में जब से सस्पैन्ड और डिसमिस करने का सिलसिला शुरू किया है तब से हलवा-पूरी वाले हफ्ते की जगह पुलिस चाँदी कूट रही है। दिसम्बर के आरम्भ से तो पुलिस वाले लखानी मैनेजमेन्ट की शानदार कारों में कम्पनी के बड़े साहबों के साथ घूम-घूम कर मजदूरों को गिरफ्तार कर रहे हैं। 9 दिसम्बर को 8 वरकर गिरफ्तार किये, 22 दिसम्बर को फिर 8, 26 दिसम्बर को 4 ...... । चार फैक्ट्रियाँ बन्द परन्तु मेन फैक्ट्रियाँ चालू हैं और इसके लिए पुलिस ने नये लोगों को गाड़ियों में भर कर फैक्ट्रियों में ले जाने की सुरक्षा की गारन्टी दी है।

➔ **कानून क्या कहता है** लखानी मैनेजमेन्ट ने जुलाई में तीन वरकर सस्पैन्ड किये जिनमें से दो को डिसमिस भी कर दिया है। 3 सितम्बर को 50 सस्पैंड किये। 5 सितम्बर को 30 और वरकर सस्पैंड किये। 29 अक्टूबर को 50 और सस्पैन्ड किये। सितम्बर में निलम्बित मजदूरों को अगस्त की उनकी तनखा भी नहीं दी है। और निलम्बन-भत्ता तो किसी सस्पैन्ड वरकर को नहीं दिया है। 30 नवम्बर को सैकेन्ड शिफ्ट में सब परमानेन्ट मजदूरों का गेट रोक दिया। ठेकेदारों के मजदूर बाहर ....

जजों ने फरीदाबाद में लखानी ग्रुप की 16 फैक्ट्रियों के गेटों से मजदूरों को 50 गज दूर रहने के हुकम दिये हैं। लेबर डिपार्टमेन्ट को दिसम्बर के 28 दिन में ही मजदूरों की तरफ से 15 कम्पलेन्ट किये जा चुके थे जिन पर मात्र तारीखें दे दी जाती हैं और मैनेजमेन्ट का कोई आदमी नहीं पहुँचता। मुख्यमंत्री को 4 खत। डी सी को 4 खत। एस पी को 4 खत.....

कानून चुप नहीं है। अपना काम कर रहा है। मजदूरों को थका कर बिखेरने की अपनी भूमिका को कानून बखूबी निभा रहा है।

पीछे लगी ठोकरों से सीख

मजदूरों का गुस्सा बढ़ कर विस्फोटक हो जाता है तब और मैनेजमेन्टों को मजदूरों पर बड़ा हमला करना होता है तब, मजदूरों को बाँध कर थकाने व बिखेरने की राजनीति चलती है। मैनेजमेन्टों और सरकारों की यह शतरंज जगह-जगह देखने में आ रही है। मजदूरों को बाँधने वाली बेड़ियाँ हैं :

● चन्द लोग ही बोलेंगे और उनके कहने पर मजदूर सिर्फ नारे लगायेंगे।

● चन्द लोग ही सोचने, समझने व फैसले लेने के ठेकेदार होंगे और उनके हुकमों के मुताबिक ही मजदूर उठेंगे व बैठेंगे।

● वार्तायें-नेगोसियेशन बन्द कमरों में होंगी जिनमें चन्द लोग शामिल होंगे। जब-तब तोड़ी-मरोड़ी आधी-परधी बातें मजदूरों को भाषणों में सुना दी जायेंगी।

● मजदूरों द्वारा सवाल पूछने को दहाड़ कर तोड़-फोड़ और चमचागिरी करार दिया जाता है।

थकाने के लिये अदालतों, साहबों, मंत्रियों की सीढियाँ और तारीखें हैं। बिखेरने के लिये भूख, किराया आदि-आदि तो हैं ही।

लखानी शूज में ही इन 15 वर्षों में बाँध कर थकाने व बिखेरने की यह राजनीति तीन बार थोक में मजदूरों को निकलवा चुकी है। यही वजह है कि लखानी ग्रुप में परमानेन्ट में भी कम सर्विस वाले नौजवान वरकर ही हैं। जगह-जगह मजदूरों को ठोकर मार रही इस राजनीति से पार पाने के लिये मजदूरों द्वारा बोलना जरूरी है। अपनी बातें अपने मन में रखने की बजाय अन्य मजदूरों को बताना आवश्यक है। यह करना आसान भी है। 9 जगह धरने पर बैठे लखानी शूज के मजदूर बीस-बीस, तीस-तीस की टोलियों में अपनी बातें बताते सुबह की शिफ्टें शुरू होने के समय सड़कों पर चलें तो वे अपनी बातें आसानी से कई फैक्ट्रियों के मजदूरों को बता सकते हैं। ऐसे ही टोलियों में शाम की शिफ्टें खत्म होने के समय कर सकते हैं। लखानी शूज मजदूरों की पाँच-दस टोलियाँ हर रोज अलग-अलग सड़कों पर यह करेंगी तो हफ्ता-दस दिन में फरीदाबाद का माहौल बदल देंगी। चन्द लोगों की बजाय लखानी ग्रुप के हजारों मजदूरों की बातों से फरीदाबाद भर की मैनेजमेन्टों और पुलिस–प्रशासन की नींद उड़ जायेगी। सड़कें हमारी हैं, इलाका हमारा है, लोग हमारे हैं इसलिये बेझिझक यह कर सकते हैं। हर मजदूर के मन में ढेरों बातें भरी हैं। लखानी शूज के मजदूर टोलियों में, बीस-बीस, तीस-तीस में सड़कों पर निकल कर अपनी बातें अन्य मजदूरों को बताने वाला छोटा व आसान कदम उठायेंगे तो वे फरीदाबाद-भर के मजदूरों के लिये राह खोलेंगे।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।